3. किशोरावस्था की समस्याएँ और उनका प्रबंधन

किशोरावस्था को अधिकतर समस्याओं की आयु कहा जाता है। बाल्यावस्था की अपेक्षा किशोरावस्था में समस्याओं का समूह व्यापक होता है। किशोर स्वयं से अधिक परिवार वालों के लिये समस्या होता है, क्योंकि इस अवस्था में उसका विस्तृत समूह अधिक व्यक्तियों को प्रभावित करता है। सारे परिवर्तन शारीरिक, सामाजिक, सांवेगिक इसी अवस्था में होते हैं। वांछित व्यवहार के बारे में ज्ञान का अभाव, शिक्षक, माता-पिता की अपेक्षाएँ, जीवन के तनाव, दबाव आदि समस्याओं के प्रमुख कारक होते हैं। किशोरों की अधिकतर समस्याएँ सामाजिक होती हैं। उन्हें अपने समाज व उसके मानकों के साथ समायोजन करना होता है। नई चुनौतियों का सामना करना होता है जो पिछली बाल्यावस्था की तुलना में अधिक जटिल होती है।

पूर्व-किशोरावस्था की समस्याएँ

पूर्व-किशोरावस्था के कई प्रमुख लक्षण ऐसे हैं जो पूर्व-किशोरावस्था को बाल्यावस्था और उत्तर-किशोरावस्था से अलग करते हैं। वे निम्न हैं:-

(i) पूर्व-किशोरावस्था का प्रमुख लक्षण अस्थिरता होता है। इस आयु में अस्थिरता पराकाष्ठा पर पहुँची होती है। एकदम उत्साहित हो जाते हैं फिर उदासीन हो जाते हैं। विशेषकर सामाजिक सम्बन्धों में उनकी अस्थिरता बहुत ही स्पष्ट होती है। विपरीत लिंग वालों के साथ मित्रता, उनकी महत्त्वाकांक्षाओं में, विशेष रूप से व्यावसायिक महत्त्वाकांक्षाओं में अस्थिरता पाई जाती है। भविष्य की योजना बनाना उनके लिये बहुत मुश्किल काम होता है।

(ii) साइमण्डस (1936) के अनुसार इस अवस्था के किशोर और किशोरियों की रुचियों में अन्तर पाया जाता है।

(iii) लड़कों की तुलना में लड़कियों की समस्याएँ अधिक होती हैं।

(iv) लड़कियों की समस्याएँ अधिकतर स्कूल, माता-पिता, पारिवारिक समायोजन, सामाजिक समायोजन, व्यक्तिगत आकर्षण तथा शिष्टाचार से संबंधित होती हैं। जबकि लड़कों की समस्याएँ पैसा कमाने, खर्च करने, पैसा बनाने तथा उसके भविष्य के जीवन से संबंधित होती हैं।

(v) लेडिस (1954,) ने कहा है कि हमारे जीवन में किशोर समाज पर आत्मनिर्भर है और किशोर-किशोरियाँ स्वतंत्रतापूर्वक जोड़े बनाते हैं, उन्हें बीस साल की आयु के पहले ही इतने अधिक निर्णय कर लेने होते हैं जितने कि उनके तीन-चार पीढ़ी पहले के पूर्वजों को अपने पूरे जीवनकाल में नहीं करने पड़ते थे।

(vi) इन अध्ययनों से पता चलता है कि उनकी संख्या बहुत होती है। अधिकांशत: शारिरीक आकृति और स्वास्थ्य, घर के अन्दर और बाहर वालों के साथ सामाजिक सम्बन्ध, विषमलिंगीय सम्बन्ध, भविष्य की योजनाएँ, शिक्षा, व्यवसाय का चुनना और जीवन साथी का चुनाव शामिल हैं।

(vii) इवान व कोरी (1950), गेरीसन व कनीनघास (1952) के अनुसार सामान्य रूप से औसत वृद्धि के किशोरों को अपेक्षा तीव्र बुद्धि वाले किशोरों की समस्याएँ और आकुलताएँ कम होती हैं, जिसमें मालूम पड़ता है कि औसत बुद्धि वालों की अपेक्षा तीव्र वृद्धि वाले किशोरावस्था से अच्छा समायोजन करते हैं।

(viii) गेरीसन एवं कनीनघास (1952) के अनुसार इस अवस्था के किशोर-किशोरियों की समस्याओं में अन्तर पाया जाता है। लड़कों की तुलना में लड़कियों की समस्याएँ अधिक होती हैं, जिसका उन्हें सामना करना पड़ता है तथा जैसे-जैसे आयु बढ़ती जाती है, लड़कियों की समस्याएँ बढ़ती जाती हैं और लड़कों की समस्याएँ घटती जाती हैं।

उत्तर-किशोरावस्था की समस्याएँ भी पूर्व-किशोरावस्था की तरह व्यक्ति के जीवन की एक संक्रमणकालीन अवस्था होती है। पूर्व-किशोरावस्था में प्रौढ़ की स्थिति से और व्यवहार में प्रौढ़ स्तरों से जो समायोजन शुरू हो चुके होते हैं, वे इस अवधि में पूरे हो जाते हैं।

पूर्व-किशोरावस्था से भेद करने के लिये उत्तर-किशोरावस्था में पहुँचे हुए किशोर-किशोरियों को आमतौर पर कई नाम दिये जाते हैं। उन्हें

प्राय: 'युवक-युवती', जवान पुरुष, जवान स्त्री कहा जाता हैं। इससे यह आभास होता हैं कि समाज उन्हें परिपक्व मानता है।

किशोरावस्था की प्रगति के साथ पूर्व-किशोरावस्था की अस्थिरता की जगह धीरे-धीरे अधिकाधिक स्थिरता आती जाती है। स्थिरता के कारण ये जीवन के साथ अच्छा समायोजन कर लेते हैं।

स्टोन (1948) व विलियम्स (1950) के अनुसार उत्तर किशोरों की गम्भीर समस्याएँ विद्यालय कार्यों, व्यावसायिक वरीयता, व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक समायोजन आदि से सम्बन्धित होती हैं।

पूर्व व उत्तर किशोर की समस्याएँ आमतौर पर बहुत कुछ वही होती हैं जो छोटे किशोर की होती हैं। उत्तर किशोर समस्याओं का सामना अलग तरीके से करता है और उसके समाधान में अधिक परिपक्वता होती है। एम. टेरेहे व बी. ए. मसिक (1954) के अनुसार किशोर प्राय: रूपये पैसे को और लैंगिक समस्याओं को सबसे गम्भीर मानते हैं जबकि युवतियाँ व्यक्तित्व को आकर्षक बनाने तथा पारिवारिक सम्बन्धों की समस्याओं को गम्भीर मानती हैं।

उत्तर-किशोरावस्था सामान्य रूप से पूर्व-किशोरावस्था की अपेक्षा अधिक सुखी होती है। बड़े किशोरों का कम या अधिक सुखी-दु:खी होना इस बात पर बहुत निर्भर करता है कि घर के अन्दर और अपने सामाजिक सम्बन्धों में वह कितना समायोजित है।

वैसे देखा जाये तो सभी अवस्थाओं में बालकों की अपनी-अपनी समस्याएँ होती है, जिनके समाधानों में प्रौढ़ों को कठिनाई होती है, परन्तु किशोरावस्था की समस्याएँ अधिक दु:खी करने वाली होती हैं। इसलिये किशोरावस्था को दु:खी अवस्था भी कहते है। इसका कारण यह भी है कि किशोरों को प्राय: उनकी शारीरिक बनावट के कारण प्रौढ़ों के प्रतिमान से देखा जाता है।

3. किशोरावस्था की समस्याएँ और उनका प्रबंधन

महत्त्वपूर्ण बिन्दु :

1. किशोरावस्था को समस्याओं का काल कहा जाता है। किशोरों की मुख्य समस्या समायोजन को लेकर होती है।
2. पूर्व किशोरावस्था का प्रमुख लक्षण अस्थिरता होता है।
3. लड़कों की तुलना में लड़कियों में समस्याएँ अधिक होती हैं।
4. उत्तर किशोरों की गम्भीर समस्याएँ विद्यालय कार्यों, व्यावसायिक वरीयता, व्यक्तिगत, मनोवैज्ञानिक समायोजन आदि से सम्बन्धित होती है।

अभ्यासार्थ प्रश्न :

1. निम्न प्रश्नों के सही उत्तर चुनें :

(i) किशोरावस्था को कहते हैं :

(अ) निरोगी अवस्था (ब) तनावहीन अवस्था

(स) समस्याओं का काल (द) उपरोक्त सभी

(ii) किशोरों में शासन का प्रतिरोध करने के साथ-साथ ..... होने की चाह भी पायी जाती है।

(अ) स्वतन्त्र (ब) निर्भर

(स) बेधड़क (द) मर्यादित

(iii) किशोरों के व्यवहार में परिवर्तन का प्रमुख कारण है।

(अ) माता-पिता की अपेक्षाएँ (ब) जीवन में तनाव

(स) दबाव (द) उपरोक्त सभी

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

(i) लड़कों की तुलना में लड़कियों की समस्याएँ ..... होती हैं।

(ii) ..... के अनुसार किशोर समाज पर आत्मनिर्भर है।

(iii) किशोर और किशोरियों की रुचि में ..... पाया जाता है।

3. किशोरावस्था को समस्याओं का काल क्यों कहते हैं?

4. किशोरावस्था की विभिन्न समस्याओं पर टिप्पणी लिखें।

5. किशोरावस्था में अस्थिरता को रोकने हेतु माता-पिता व शिक्षक के योगदान का महत्त्व बताइये।

उत्तरमाला :

1. (i) स (ii) अ (iii) द

2. (i) अधिक (ii) लेडिस (iii) अन्तर